RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-02
Issue-07
July-2017

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com

सिनेमा और राष्ट्रीयता

मीरा सिन्हा

शोधार्थी, हिंदी विभाग, मगध विश्वविद्यालय बोधगया

हमारे यहाँ फिल्मों का सफर बहुत पुराना नहीं है। भारत में फिल्म का आविष्कार ही सर्वप्रथम 1913 में मूक फिल्म के रूप में हुआ और 1913 से 1930 तक मूक फिल्मों का ही दौर रहा। इस दौरान ज्यादातर फिल्में धार्मिक आख्यानों पर आधारित बनी इसके बाद अरेबियन नाइट्स पर आधारित फंतासी परंतु जब ऐतिहासिक कथानकों पर फिल्में बनने लगी तब यशस्वी भारतीय चरित्रों पर आधारित फिल्में भी बनी जिसमें राष्ट्रीयता की महक है। डी. जी. गांगुली ने 1921 में बिलैत फेरत और 1925 में बाबूलाल पेंटर ने सावकारी पाश उर्फ इंडियन शायलॉक बनाकर सामाजिक राजनीतिक और सांस्कृतिक रूप से अत्यंत सजग होने का संदेश दिया था। 1920 के बाद ज्यादातर धार्मिक के स्थान पर ऐतिहासिक अरेबियन नाइट्स की कथाओं पर आधारित फंतासी और मारधाड़ की काल्पनिक कथाओं पर आधारित फिल्में बनने लगीं परंतु इसके साथ हीं बाबूराव पेंटर, मालजी पेंढ़ारकर, डी. जी. फालके, आचार्य प्रहलाद केशव, अत्रे और वी. शांताराव जैसे फिल्मकार भी मूक युग में उभरकर सामने आए जिन्होंने देशभक्ति से ओत–प्रोत और सामाजिक प्रश्नों से जूझने वाली फिल्मों का निर्माण किया और विचारणीय बात यह है कि इनमें से एक भी व्यक्ति मूल रूप से हिन्दी भाषी नहीं था। इन्होंने उदयकाल, वंदे मातरम् आश्रम, विलायत पलट जैसी अविस्मरणीय देशभक्ति मूक सिनेमा सिनेमा जगत को दिया है और यह परंपरावादी कथानाकों के मुकाबले अधिक सराही गई।

मूक युग में ही सिनेमा को सामाजिक परिवर्तन की शक्ति के रूप में इन फिल्मकारों ने अच्छी तरह पहचान लिया था। 1920 से 1930 के बीच के एक दशक में वर्तमान सभी कलारूपों के बीच इन जादुई छवियों ने अपना सम्मोहन कायम कर लिया था। इन फिल्मकारों ने जनमानस को उद्वेलित करने के लिए सिर्फ सामाजिक आख्यानों को ही नहीं चुना अपितु धार्मिक और ऐतिहासिक कथानकों के द्वारा भी देश–प्रेम और जीवनानुराग का संदेश दिया।[1]

सबसे पहले 1930 में बाबूराव पेंटर ने हरिनारायण आप्टे के उपन्यास 'गढ़ आला पण सिंह गोला' पर सिंह गढ़ फिल्म बनाई थी। इसमें वी. शांताराम ने भी एक संक्षिप्त भूमिका की थी। 1924 में मणिलाल जोशी ने कन्हैयालाल मणिकलाल मुंशी के उपन्यास पर पृथ्वी वल्लभ (1924), नवल गांधी ने रवीन्द्रनाथ टैगोर की कथा पर बलिदान (1927) बनाई। ये सब फिल्में समाज में देश–प्रेम की भावना को उद्वेलित करने वाली फिल्में थी। इन सब ने हरिनारायण आप्टे के उपन्यास पर आधारित बाबूराव पेंटर की सावकारी पाश (1925) सबसे महत्त्वपूर्ण फिल्म मानी जाती है। 1930 में प्रभात स्टूडियों द्वारा एक मराठी फिल्म बनी 'व्राय'। इसके फिल्म निर्माता आर. एस. डी. चौधरी थे। इस फिल्म पर ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत में प्रतिबंध लगाया गया क्योंकि इसमें भारतीयों को नेताओं के रूप में दिखाया गया था और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान इस तरह के चित्रण पर रोक थी।

इसके बाद 1931 में आलम आरा के प्रदर्शन के साथ ही भारत में सवाक् फिल्मों के दौर की शुरूआत हुई। इसके साथ ही फिल्मों का पहली बार भाषागत विभाजन हुआ। 1931 से 1935 के दरमियान लगभग 612 सवाक् फिल्में बनी जिसमें 434 हिन्दी भाषा में बनाई कई और शेष 178 फिल्में ग्यारह अन्य भाषा में बनाई गई। इसमें मुख्य बंगाली, मराठी, तमिल और तेलुगू ही थी। इस उपलब्धि के कारण इन निर्माता निर्देशकों को और बल मिला जो मन की व्यथा, समाज एवं देश की व्यथा यह चाह कर भी यह सही रूप से नहीं व्यक्त कर पाते थे अब ये भाषा के माध्यम से सिनेमा के जरिए कह सकते थे।[2]

इन्हीं समय के दौरान वी. शांताराम ने एक फिल्म बनाई 1934 में अमृत मंथन यह नारायण हरि आप्टे के मराठी उपन्यास 'न पटनारी गोष्ठा' पर आधारित थी। इस फिल्म को देश से लेकर विदेश तक सराहा गया है। इस सिनेमा का कथा आधार ऐतिहासिक–सांस्कृतिक होते हुए भी यह फिल्म अपने समय के आक्रोश को ही स्वर देती है। इसमें नरबलि और पशुबलि के विरूद्ध सशक्त आवाज उठाई गई थी। अत्याचारी और अमानवीय शासन के विरूद्ध संघर्ष प्रकारांतर से तत्कालीन समय में भारतीय जनमानस के अंग्रेजों की दमनकारी सत्ता के विरूद्ध आक्रोश के स्वर में भी परिभाषित हो गया था।

1935 में महबूब खान की फिल्म आई 'अल हिलाल उर्फ द जजमेंट ऑफ़ अल्लाह' तब से लेकर 1962 में आई 'सन् ऑफ़ इंडिया' तक महबूब खान ने समाज को सिनेमा का कालजयी रूप दिखाया। 1940 में औरत, 1942 में रोटी, 1952 में आन, 1954 में अमर और 1957 में बनी मदर इंडिया ऐ सारी फिल्में प्रत्यक्ष रूप से तो नहीं परंतु अप्रत्यक्ष रूप से अंग्रेजी शासन एवं जमींदारी प्रथा की गाथा सुनाती है और हमें उनके प्रति संघर्ष करने को कहती है। इसी दौरान 1938 में गुडावल्ली रामाब्रह्मम द्वारा सह निर्मित और निर्देशित सामाजिक

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

समस्या पर आधारित फिल्म आई रायथू विड्डा। इस पर भी ब्रिटिश प्रशासन द्वारा प्रतिबंध लगा दिया गया क्योंकि इसमें किसानों द्वारा जमींदार के विरूद्ध बगावत दिखाई गई थी।

इसी बीच मास्टर विनायक ने 'ब्रह्मचारी' और 'भ्रांडी की बोतल' बनाई। ये दोनों राजनीतिक व्यंग फिल्में थी जिसने तत्कालीन समाज में उथल–पुथल मचा दी। सोहराब मोदी भी इसी दौरान अपनी फिल्म 'पुकार' (1939) और 'सिकंदर' (1941) के साथ फिल्मी दुनिया में आए। उन्होंने अपने आरंभिक दौर में 'खून का खून' जैसी क्रांतिकारी फिल्म बनाई थी परंतु पुकार और सिकंदर में उन्होंने इतिहास के दो आख्यानों को इतनी गंभीरता के साथ प्रस्तुत किया था कि वे आख्यानों से आगे बढ़कर दर्शकों के मर्म को स्पर्श करने में पूरी तरह सफल हुई। सिकंदर और राजा पुरू के बीच का संघर्ष मूल रूप से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में स्वतंत्रता प्राप्ति के संघर्ष की बिंबात्मक अभिव्यक्ति बन गया।

'पुकार' में जहांगीर की न्याय व्यवस्था के आख्यान के द्वारा भी मानवीय समानता के दृष्टिकोण को पुष्ट किया गया है।

1946 में ख्वाजा अहमद अब्बास ने विजन भट्टाचार्य के नाटक 'नबान्न' पर आधारित फिल्म 'धरती के लाल' बनाई। इस फिल्म की कथा में कृष्ण चंदर की कहानी 'अन्नदाता' को भी जोड़ा गया था और विजन भट्टाचार्य के ही एक अन्य नाटक 'जबानबंदी' से भी कुछ दृश्य लिए गए थे और इसी वर्ष चेतन आनंद ने मैक्सिम गोर्की के उपन्यास 'द लोवर डैप्स' पर आधारित नीचा नगर बनाई थी। इन दोनों फिल्मों के निर्माण के साथ इप्टा की पूरी टीम खड़ी थी। इन दोनों ही फिल्मों का ऐतिहासिक महत्व है। ये फिल्में वस्तुतः हिन्दी के स्वर्णकाल की दिशासूचक हैं।

लेकिन जब बात फिल्मों में राष्ट्रीयता की प्रस्तुती की हो रही है तो हम इसे मनोज कुमार के बिना अधूरा प्रतीत कर रहे हैं। परंतु मनोज कुमार को शामिल करने के लिए हमें स्वतंत्रता के पूर्व वाली फिल्मों से निकलकर स्वतंत्रता के बाद वाली फिल्मों में आना पड़ेगा और वैसे भी स्वतंत्रता के पूर्व की फिल्मों का समय काल बहुत छोटा था और उस पर अंग्रेजों का इंतना क्रुर रवईया था कि निर्माता–निर्देशक चाह कर भी अपनी अभिव्यक्ति पूर्ण रूप से नहीं कर पाए। परंतु आजादी के बाद भी बहुत सारी ऐसी फिल्में बनी है जो हमें झकझोर देती है इसलिए स्वतंत्रता बाद बनी राष्ट्रीय फिल्मों की चर्चा बिना फिल्मों में राष्ट्रीयता का वर्णन अधूरा है।

हम बात कर रहे थे दादा साहब फाल्के से पुरस्कृत अभिनेता, निर्देशक एवं निर्माता मनोज कुमार की। इनका पूरा नाम हरि किशन गिरि गोस्वामी था परंतु इनको प्रसिद्धि मिली मनोज कुमार के नाम से। इन्होंने फिल्म में अपना पदार्पण 1957 में निर्देशक लेखराज भास्की फिल्म फैशन से किया। परंतु उनकी पहली हिट फिल्म थी 'हरियाली और रास्ता' जो 1962 में बनी।[3]

मनोज कुमार प्रारंभ से ही भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को बहुत करीब से देख रहे थे और ये भगत सिंह से बहुत प्रभावित थे। इनमें देश के लिए कुछ कर गुजरने की तड़प प्रारंभ से ही थी। इसी तड़प को इन्होंने 1965 में एस. राम शर्मा द्वारा निर्देशित, केवल कश्यप द्वारा निर्मित और स्वयं भगत सिंह के मित्र बटुकेश्वर दत्त द्वारा लिखित फिल्म 'शहीद' में भगत सिंह की मुख्य रूप में अभिनय कर दिखाई है। इस फिल्म में मनोज कुमार के अलावा और भी कई प्रसिद्ध कलाकार थे जैसे निरूपा राय, कामिनी कौशल, प्रेम चोपड़ा, मनमोहन, प्राण, मदन पुरी, असित सेन आदि। इस फिल्म ने 13वें राष्ट्रीय अवार्ड की सूची में हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ फिल्म के साथ–साथ राष्ट्रीय एकता पर बनी सर्वश्रेष्ठ फिल्म के लिए नरगिस दत्त पुरस्कार भी अपने नाम किया। यह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर आधारित अब तक की सर्वश्रेष्ठ प्रमाणिक फिल्म है।

इसके बाद 1967 में एक फिल्म मनोज कुमार के निर्देशन में बनी 'उपकार'। इस फिल्म को छः फिल्म फेयर पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। इस फिल्म के लेखक भी मनोज कुमार ही थे और सबसे महत्त्वपूर्ण बात कि इसी फिल्म से मनोज कुमार की छवि भारत कुमार की बनी है। इस फिल्म में मनोज कुमार के साथ आशा पारेख, प्रेम चोपड़ा, कन्हैया लाला, प्राण, डेविड अब्राहम, मनमोहन, कृष्णा, मदनपुरी, अरूणा ईरानी इत्यादि ने अभिनय की अमिट छाप छोड़ी है। यह फिल्म तत्कालीन प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री के विशेष आग्रह पर मनोज कुमार ने बनाई थी। यह मुख्यतः लालबहादुर शास्त्री का नारा "जय जवान, जय किसान" को चरितार्थ करती है। इस फिल्म के सभी गाने अत्यधिक लोकप्रिय हुए परंतु "मेरे देश की धरती ने" हमारे मन मस्तिष्क पर एक अलग ही छाप छोड़ दी। इस फिल्म में गांव के लोगों का शहर की तरफ पलायन और फिर पुनः वापस लौटने और उससे जुड़े सामाजिक रिश्तों की कहानी है जिसमें उस वक्त के हालात को ज्यादा–से–ज्यादा समेटने की सफल कोशिश की गई है।[4]

'उपकार' के पश्चात् 1970 में भारत कुमार की पहचान को सार्थक करते हुए मनोज कुमार की दूसरी फिल्म आई 'पूरब और पश्चिम'। इस फिल्म के निर्माता, निर्देशक और मुख्य कलाकार के रूप में मनोज कुमार स्वयं थे और इनके साथ विनोद खन्ना, अशोक कुमार, शायरा बानो, ओम प्रकाश, प्रेम चोपड़ा आदि ने भरपूर सहयोग किया। यह फिल्म मुख्य रूप से उनलोगों को जागृत करता है जो भारतीय हैं परंतु रोजी–रोटी की तलाश में पश्चिम अर्थात् इंग्लैण्ड अमेरिका आदि जगहों पर चले गए हैं और वहीं जाकर वो अपना घर बसा लिए हैं इतना ही नहीं वो इस कदर पश्चिमी सभ्यता में रच–बस गए है कि अपनी सभ्यता, संस्कृति और अपने वतन (भारत) को भूलते चले जा रहे हैं। उन्हें पुनः अपने वतन की ओर उन्मुख करना ही इस फिल्म का मुख्य उद्देश्य था। इस फिल्म का एक गाना "है प्रीत जहाँ की रीत सदा मैं गीत वहीं

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

का गाता हूँ" आज भी अत्यंत लोकप्रिय एवं देश–प्रेम से प्रेरित करने वाला है।[5]

1981 में मनोज कुमार और सलीम खान द्वारा लिखित फिल्म आई क्रांति। इसका निर्देशन एवं निर्माण भी मनोज कुमार ने किया था। इसके मुख्य कलाकार के रूप में मनोज कुमार, दिलीप कुमार, हेमा मालिनी, शत्रुधन सिन्हा, प्रेम चोपड़ा, शशि कपूर, परवीन बॉवी, सारिका, निरूपा रॉय आदि ने अद्वितीय अभिनय किया है। यह फिल्म वैसे तो पूर्णरूपेण ड्रामा फिल्म है परन्तु इसमें दिखाए गए दृश्य अंग्रेजों से क्रांतिकारियों के युद्ध को दर्शाता है, उनके संघर्ष को समाज के सामने लाता है और अंग्रेजों की क्रूरता को जगजाहिर करता है।

1999 में मनोज कुमार द्वारा निर्देशित फिल्म आई 'जय हिन्द' जिसमें मनोज कुमार के पुत्र कुणाल गोस्वामी के अलावा बहुत सारे नामचीन फिल्मी हस्तियों ने भाग लिया परंतु यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर चली नहीं और शायद इसके बाद मनोज कुमार ने अन्य कोई फिल्म नहीं बनाई है।

जहाँ फिल्मों में स्वतंत्रता की बात हो रही है वहाँ हम राजकपूर की फिल्म 'आवारा' और 'श्री 420' को भी हम नजर अंदाज नहीं कर सकते क्योंकि इन फिल्मों ने हम भारतवासियों की एक अपनी छवि विदेशों में भी स्थापित की है।[6]

1970 के दशक में भी श्याम बेनेगल जैसे कई फिल्मकार यथार्थवादी समानांतर सिनेमा का निर्माण करते रहे। इस दौरान सक्रिय फिल्मकार थे सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक, मृणाल सेन, बुद्धदेव दास गुप्ता और गौतम घोष आदि बंगाली सिनेमा में। के बालाचदर, बालू महेन्द्र, भारती राजा और मणिरत्नम तमिल सिनेमा में। अंडूर गोपालकृष्णन, शाजी एन. करूण, जी. अरविंदन, जॉन अब्राहम, भारथन और पद्मराजन मलयालम सिनेमा में, नीरद एन. मोहपात्रा आडिया सिनेमा में। के. एस. टी. शास्त्री और वी. नरसिंह राव तेलूगु सिनेमा में और मणि कौल कुमार शाहणी, केतन मेहता, गोविन्द निहलानी और विजया मेहता हिन्दी सिनेमा में।

हिन्दी सिनेमा ने अपने शुरूआती दौर में अछूत कन्या (1936), सुजाता (1959) आदि फिल्मों के माध्यम से जाति और संस्कृति की समस्याओं का विश्लेषण किया। और हिन्दी सिनेमा को अंतर्राष्ट्रीय ख्याति चेतन आनंद की नीचा नगर, राजकपूर की आवारा और शक्ति सामंत की आराधना आदि फिल्मों से मिली।

संदर्भ सूची

1 भारतीय सिनेमा का सफरनामाः जय सिंह, पृ0 69
2 भारतीय सिनेमा का सफरनामा : जय सिंह, पृ0 72
3 Manoj kumar Biography in Hindi/ देशभक्ति के प्रति मनोज कुमार की जीवनी ://www.biographyhindi.com
4 मनोज कुमार : भारत कोष, ज्ञान का हिन्दी महासागर, पृ03 http://bharatdiscovery.org/india...
5 मनोज कुमार : भारत कोष, ज्ञान का हिन्दी महासागर, पृ 03 https://bharatdiscovery.org/india...
6 राज कपूर :सृजन प्रक्रिया – जय प्रकाश चौकसे, पृ0 59

© RRIJM 2015, All Rights Reserved